Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/234
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAY-JUNE 2024, Vol- 13/83

भारत की लोक कलाएं

डॉक्टर प्रेमलता कश्यप

असिस्टेंट प्रोफेसर, गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

Paper Received On: 20 May 2024
Peer Reviewed On: 24 June 2024
Published On: 01 July 2024

Abstract

लोककला मानव के मानस का वह लोकरंजन भाव है जो रूपाकारो में परिवर्तित हो रेखाओं के माध्यम से व्यक्त होते हैं यह हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में उन तमाम चीजों की शक्ल में गुथी हुई है जिनका हम अपने घरों में अपने त्योहार और उत्सवों पर अपनी आत्मभिव्यक्ति के साधनों के रूप में इस्तेमाल करते हैं चाहे हम किसी भी जाति या धर्म के हो, लोक कला जीवन का वह स्थल है जहां हमारी आत्मा निवास करती है क्योंकि आत्मा हर उस व्यक्ति से जुड़ी है जो सहज है, सरल है और यही सहजता, सरलता लोककला का मूल मंत्र है इसलिए किसी भी देश या प्रदेश की संस्कृति का ज्ञान वहां की लोककला और लोकगीतों अथवा लोकनृत्य,लोक भाषाओं से जाना जाता है और उसी में ही मनुष्य विचार और सामाजिक विकास की संपूर्ण सामग्री मिल जाती है लोकचित्रों की प्रस्ताजितनी भी अनुभूतियां हैं वह सभी लोक कला में के विषय होते हैं

शब्द संकेत- *लोककला, स्वच्छंदता, आत्मभिव्यक्ति, अनुभूतियां*

प्रस्तावना - किसी भी देश का लोक साहित्य उसे देश के जनमानस का प्रतिबिंब है लोक संस्कृति में जहां लोकमूल्य और लोक संस्कारों का महत्व है वहां लोक साहित्य और लोक कला का भी है लोककला अनंत लोक जीवन की धारा है जो ना रूकती है और न हीं कला के प्रवाह से विहीन होकर गतिहीनता और शुष्कता को प्राप्त होती है भारतीय जीवन में भारतीय जीवन का महत्व तो है ही साथ ही लोक जीवन में भी धार्मिक अनुष्ठानों की एक लंबी क ड़ी प्राप्त होती है परंपरा, रीति रिवाज इसके कलेवर में रीड की हड्डी की भांति अपनी प्रतिष्ठा के महत्व को चरितार्थ करते हैं जिससे उसका लोक तत्व परिष्कृत रूप में प्रस्तुत होता है प्रत्येक त्योहार पर उनसे संबंधित मांगलिक चिह्न व रूपों को बनाया जाता है लोक कला हमारे जीवन का अभी अविच्छिन्न अंग है वह हमारे प्रतिदिन के जीवन में विभिन्न रूप से गुथी हुई है लोक कला मनुष्य की स्वाभाविक अभिव्यक्ति का सहज रूप होने के कारण आशा, आकांक्षा, आनंद उत्साह आदि मंगलमय भावनाओं से उत्प्रोत होती है लोक कलाएं संस्कृति का श्रृंगार करती हैं चुनौतियों से जूझते हुए लोक कलाएं समाज को ऊर्जा और चेतना प्रदान करती हैं हमारे देश में पृथ्वी को धरती माता कहा गया है मातृभूमि तो इसका सांस्कृतिक तथा विकसित रूप है इसी धरती माता का श्रद्धा से अलंकरण करके लोक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मानव ने अपनी आत्मीयता का परिचय दिया हमारे देश में प्रत्येक राज्य में अलग-अलग नाम से लोक कला को जाना गया है कहीं रंगोली,मंडाना तो कहीं सांझी, अल्पना। हर क्षेत्र के जनमानस ने किसी न किसी रूप में अपने मां के अधिकारों को लोक कला के माध्यम से तीज त्योहारो ,शादी -विवाह या अन्य किसी धार्मिक अनुष्ठान पर व्यक्त करके दिखाया है जो सराहनीय है लोक कला से अभिप्राय- लोक कला की उद्भव और विकास की कहानी अनंत है मानव जीवन के अभ्युदय के साथ लोक कला का भी जन्म हुआ और मानवता के विकास के साथ वह भी आगे बड़ी। लोक कला का जन्म कला के जन्म से जुड़ा है जब आदमी पशुओं की भांति गुफाओं में निवास करता था तब भी लोक कला का प्रचलन था लोक का शाब्दिक अर्थ है -देखना -लोक मनुष्य के असीम विश्वासों कृतियां रूढ़ियों व्यवहारों परंपराओं एवं संकल्प से निर्मित होता है जो सामान्य जन की आत्मिक अभिव्यक्ति का मुर्त रूप है जो पहले कस्बो ग्रामों एवं आदिवासी क्षेत्रों में प्रचलित थे परंतु वर्तमान में यही जन्म अभिव्यक्ति नगरों एवं शहरों में विस्तृत हो चुकी है जिनमें तीन प्रमुख उद्देश्य हैं -अनुष्ठानिक, अलंकारिक, कौशलार्थ । इस प्रकार लोक कलाएं न हीं धर्म संस्कृति, सौंदर्य,प्रेम एवं सह विचारों को समाज में जीवित रखकर उसको एकता में पिरोया हैं इस प्रकार लोक कलाएं भी किसी कलाकार के लिए मुख्य शिक्षक होती हैं 20वीं शताब्दी से आरंभ होकर लोक कला के विविध रूप दृश्यमान होते हैं जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में मेलों के आयोजनों में मिट्टी एवं लकड़ी के खिलौने बर्तन आदि आम व्यक्तियों द्वारा गढ़े जाते हैं लोक कला भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर मानी जाती है लोक कला एवं परंपरा एक दूसरे की पूरक भी हैं इस प्रकार लोक कला एवं संस्कृति समाज का दर्पण है प्रत्येक क्षेत्र की जनता की अपनी कला होती है जिसके पीछे वहां के आम आदमी की श्रद्धा, आस्था परीक्षित होती है हमारा देश देवों की भूमि कहा जाता है जनमानस की ईश्वर के प्रति आज भी आस्था है जिसको हर क्षेत्र में अपने-अपने तौर तरीकों से अपनी परंपरा द्वारा बनाकर अपनी आस्था को व्यक्त करते हैं जगह-जगह की लोक परंपराओं का संक्षिप्त में विवरण इस प्रकार है

रंगोली- (महाराष्ट्र) पर्व त्योहारो तथा विवाह शादी के शुभ अवसरों पर मांगलिक चिन्हो का दीवारों तथा आंगनों में अंकित करने का रिवाज बहुत पुराना है आंगन तथा धरती पर अंकित किए जाने वाले चित्रों को चौक या रंगोली और तथा दीवारों पर अंकित किए जाने वाले चित्रों को थापा या ठापा कहते हैं प्रत्येक त्योहारो तथा उत्सवों के लिए विभिन्न थापा अंकित किए जाने का प्रचलन है इसको बनाने के लिए श्वेत चमकदार पत्थर को अग्नि में तपाकर बारीक पीसा जाता है तद्नतर उसमें अन्य कृत्रिम रंग मिलाकर रंगोली की सामग्री तैयार की जाती है इसी को धरा पर बुरक कर आलेखन बनाया जाता है रंगोली यहां के लोक जीवन का अंग है

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

***मांडना**- (*राजस्थान)राजस्थान के प्रत्येक घर में भित्तीयो तोरणद्वारों तथा सिंहद्वारों पर चित्ररचना और चौक में 'माडंना' का कार्य देखने को मिलता है वहां के भवनों बतायें, शिखर तथा द्वार आदि में घोड़ा ,तलवार, कदली पत्र, गणेश, चक्र, सारस आदि के चित्रण में राजस्थान की लोककला मुखरित होती है सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का संदेश देते यह चित्र कच्चे घरों के फर्श एवं दीवारों पर फूलों के डिजाइन में अंकित किए जाते हैं माडंना शब्द का अर्थ ही भूमि को रेखीय अभिप्रायों से सजाना है जोकि संस्कृत मूल के शब्द 'मंड 'से लिया गया है दीवारों पर बने मांडनो को भीत मांडना तथा फर्श पर बने मांडनो को चौक मांडना कहा जाता है उनकी तैयारी के लिए भूमि पर लाल गेरू एवं हरे पत्तों के रंग से आधार तैयार किया जाता है तथा अलंकरण को मध्य से शुरू करते हुए यह डिजाइन वृत्त का त्रिभुजाकार एवं आयताकार बनाए जाते हैं

अल्पना(पश्चिम बंगाल) अल्पना बंगाल की प्राचीन एवं पारंपरिक लोक चित्रकला है जो मंगल का प्रतीक भी है जब स्त्रियां व्रत या किसी विशेष पूजा का आयोजन करती हैं या घर में किसी विशेष उत्सव या समारोह का आयोजन किया जाता है तब महिलाएं घर के आंगन या फर्श और दरवाजों की देहरी पर अल्पना का भव्य रेखांकन करती हैं शरद पूर्णिमा को बंगाल में घर-घर में लक्ष्मी पूजा होती है उस दिन घर के मुख्य बाहरी दरवाजे से लेकर पूजा स्थल तक विशाल एवं भव्य अल्पना का रेखांकन किया जाता है जिसमें देवी के चरणों की आकृति पूजा घर तक जाती हुई बनाई जाती है इसी प्रकार इतु पूजा (सूर्य व्रत)एवं तारा व्रत में भी घर के आंगन में विशेष प्रकार का अंकन होता है अल्पना का मूल आधार शुभ श्वेत रंग होता है जो चावल के चूरे से तैयार किया जाता है कभी-कभी इसके साथ रंगीन गुलाल जैसे सूखे रंग का भी उपयोग होता है

सांझी(उत्तर प्रदेश) यहां सांझी का त्यौहार बड़े उल्लास से कई दिनों तक मनाया जाता है सांझी दीवारों पर गोबर से चित्रित की जाती है खासतौर से नवदुर्गा पूजन के लिए इसको बनाया जाता है नवरात्रों में मां दुर्गा के रूप को सांझी के रूप में बनाते हैं और नो दिन तक भजन कीर्तन करके मां दुर्गा को प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हैं जिससे मानव का मंगल होता है सांझी को को यहां सोने रखना या चौक चौक पूरना भी कहा जाता है जिसमें प्रायः चावल, आटे, कलई , हल्दी और सिंदूर से अलंकरण होता है वर्ष भर के सुअवसर पर गेहूं या जो का आटा या पिसे चावल या हल्दी से , गोबर से लीपी हुई भूमि अथवा लकड़ी की चौकी या पटरे पर घर की स्त्रियां चौक पूरती हैं कभी-कभी पूजा करने वाले पंडित या पुरोहित भी चौक पूरते हैं चौक में बिंदु और खड़ी रेखाएं,स्वास्तिक, त्रिकोण आदि की प्रतीकात्मकता स्पष्ट है सबसे पहले चौक बिंदु से प्रारंभ होता है जिससे सृष्टि रचना का आरंभ माना जाता है फिर बिंदु से स्वास्तिक एवं दो दो रेखाओं से बना चतुष्कोण उसे घेर लेता है चतुर्भुज की आठो दिशाओं को घेर कर पूर्ण कुंभ बनाए जाते हैं

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जो सुख समृद्धि एवं जीवन का प्रतीक है और जनमानस की आस्था का भी प्रतीक हैकुंभ से भरा जल जीवन रस है पूर्ण कुंभ के ऊपर बनी दो आड़ी रेखाएं स्थिरता और तीन खड़ी रेखाएं विकास की प्रतीक हैं इसे अष्टदल कमल का चौक भी कहा जाता है हठयोगी में अष्ट कमल मूलाधार से ललाट तक के अस्त्र चक्रों के प्रतीक हैं जो देह में रहते हैं और जिनसे हठ योगिक साधना की जाती है चौक में प्रयुक्त रंग भी प्रतिकार्थ होते हैं जिन्हें लोग चित्रकार जानकर ही चौक पूरता है मोटे तौर पर सफेद रंग सत्य का लाल रंग राजस्व और काला तामस का प्रतीक है सूर्य और मंगल ग्रह का रंग लाल बुद्ध का हरा बृहस्पति का पीला शुक्र और चंद्र का सफेद तथा शनि राहु और केतु का रंग काला है इस प्रकार नवग्रह की रंग योजना पारंपरिक है

उपसंहार- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हमारे देश में हर क्षेत्र की अपनी लोक कला है जिसको हम भिन्न-भिन्न नाम से जानते हैं लेकिन सबका उद्देश्य ईश्वर में आस्था और विश्वास है और जनमानस का मंगल करना है हम कह सकते हैं कि लोक चित्रकारों से भी हमारे चित्रकारों को बड़ी प्रेरणा मिलती है लोक कला पर आधारित नए प्रयोग आज के कलाकारों को अपूर्व सफलता की ओर ले जाते हैं इस प्रकार लोक कला स्वतः ही अपने सहज और निर्मल रूप में हमारे जीवन का एक अंग बन गई है इस आत्मीयता तथा निकटता के कारण लोक कला का प्रभाव मानस पटल पर अपना चिरस्थाई स्थान बना लेता है यदि हम अपने देश की लोक कला का बारीकी से अध्ययन करें तो उसमें हमें अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं क्योंकि यह भारतीय संस्कृति की आत्मा व भावात्मक एकता को सजाय अतीत की महानतम परंपराओं को आज भी बनाए हुए हैं इसमें सदा से मानव कल्याण का भाव छिपा है सर भौतिक सुख समृद्धि तथा उन्नत लोक कला का आधार है

संदर्भ सूची

भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास ,डॉक्टर लोकेश चंद्र शर्मा
भारतीय चित्रकला का विकास जीके अग्रवाल
चित्रकला का रसास्वादन , रामचंद्र शुक्ल
दीर्घा, दृश्य कला की छमाही पत्रिका अक्टूबर 2000
कल निबंध, डॉक्टर गिरिराज किशोर अग्रवाल
भारतीय चित्रकला का संचित परिचय वाचस्पति गैरोला
कल दिशा ,डॉक्टर अर्चना रानी 8. भारतीय चित्रकला असीत कुमार हलदर
कला के दार्शनिक तत्व, लाल झा चिरंजी
कला त्रैमासिक पत्रिका राज्य, ललित कला उत्तर प्रदेश

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies